बाइबल टीचर

वर्ष 17 मार्च 2020 अंक 4

सम्पादकीय

मसीह की कलीसिया नाम से तो है परन्तु वास्तव में वह मसीह की कलीसिया नहीं है

आज संसार भर में कई प्रकार की कलीसियाएं विद्यमान हैं। यह सब कुछ विशेष शिक्षाओं या उनके बनाने वालों के नामों पर बनाई गई है। आज बहुत से लोग कहते हैं और यह दावा करते हैं कि वे भी अपनी कलीसिया को मसीह की कलीसिया कहते है तथा उन्होंने साईन बोर्ड भी चर्च आफ़ क्राईस्ट का लगा रखा है परन्तु वे वास्तव में मसीह की कलीसियाएं नहीं है। आप शायद सोचे कि ऐसी क्या बात है? जो बात मैं बताने जा रहा हूं उससे यह प्रमाणित होता है कि केवल नाम रख लेने से कोई कलीसिया मसीह की कलीसिया नहीं हो सकती। संसार भर में तथा पूरे भारतवर्ष में मैं कुछ ऐसे लोगों को जानता हूं जो केवल नाम से ही मसीह की कलीसिया कहलाये जाते हैं परन्तु बाइबल की बातों को वैसे नहीं मानते जैसे मानना चाहिए।

सबसे प्रथम बात हम यह देखते हैं कि मसीह की कलीसिया आत्म-निर्भर है। प्रत्येक मण्डली अपना कार्य अपनी इच्छा से चलाती है तथा उसे किसी मुख्य ऑफिस से निर्देश नहीं मिलते। दूसरी कलीसियाओं में ऊपर से ऑर्डर मिलते हैं और उन्हें उसी आर्डर से कार्य करना पड़ता है। मसीह की कलीसिया की प्रत्येक मण्डली का अपना एक संगठन होता है जिसमें योग्य पुरुष ऐल्डर और प्रचारक होते हैं। सब ऐल्डर और प्रचारक आत्मनिर्भर होकर कार्य करते हैं तथा उन पर कोई आज्ञा नहीं चलाता। जहां बाइबल अनुसार योग्यता वाले ऐल्डर (बहुवचन में यानी एक से अधिक) वाले उपलब्ध नहीं है, वहां कलीसिया के योग्य पुरुष अगुवाई करते हैं। ये ऐल्डर लोग बुजुर्ग होते है। (1 तीमु. 3) हिन्दी की बाइबल में इन्हें अध्यक्ष भी कहा गया है। मसीह की कलीसिया में सारी बातें बाइबल के नमूने अनुसार होती है। (इब्रा. 8:5)। कई लोग जो अपने को मसीह की कलीसिया कहते हैं, वे क्रिश्चन चर्च नाम से भी जाने जाते हैं। इनकी एक बड़ी कलीसिया मध्य प्रदेश के दमोह नामक स्थान पर भी है।

दूसरी बात यह है कि नये नियम की कलीसिया जो अपने को चर्च ऑफ़ क्राईस्ट कहती है, अपनी आराधना में बाजो का इस्तेमाल नहीं करती। सन् 1859 में क्रिश्चन चर्च ने अपनी अराधना में बाजे बजाने आरंभ कर दिये थे। जो सच्ची मसीह की कलीसियाएं है उन्होंने इसका विरोध भी किया था। कई लोग कहते है पुराने नियम में ऐसा होता था, परन्तु परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि पुराना नियम यीशु ने

क्रूस पर कीलों से जड़ दिया था और आज हम नये नियम अनुसार चलते हैं। (कुलु. 2:14), इब्रानियों 9:15 को भी पढ़िये। नया नियम हमें केवल गाने के लिये कहता है। (1 कुरि. 14:15, इफि. 5:19, कुलु 3:16)। हमें मसीह की शिक्षा से आगे नहीं बढ़ना है। (2 यहून्ना 9)। आज बहुत से लोग जो अपने आप को मसीह की कलीसिया के सदस्य कहते है, परन्तु वे अपनी अराधना में बाजों का इस्तेमाल करते हैं। जहां आराधना में बाजे बजाये जाते हैं वह चर्च ऑफ़ क्राईस्ट नहीं है। जो लोग वचन में घटाते वा बढ़ाते है वे मसीह की कलीसिया के नहीं है (प्रकाशित 22:18, 19, व्यवस्था 4:2)। क्रिश्चन चर्च के लोग पहिले चर्च ऑफ क्राइस्ट में थे परन्तु उन्होंने कहा कि हम अपनी आराधना बाजों के साथ करना चाहते हैं इसलिये वे अलग हो गये।

एक और बात जो बड़ी आवश्यक है, वो यह है कि मसीह की कलीसिया के लोग यह सिखाते हैं कि उद्धार पाने के लिये यीशु में विश्वास करना, पापों से मन फिराना, यीशु का अंगीकार करना तथा बपतिस्मा लेना आवश्यक है। (मरकुस 16:15, 16, रोमियों 10:9, 10, 6:3-4, गलतियों 3:27) परन्तु जो नकली चर्च ऑफ क्राईस्ट हैं वे किसी को भी कलीसियां में मैम्बरशिप दे देते है। चाहे किसी ने पहले बपतिस्मा लिया हो और वह किसी भी डीनोमीनेशन का हो। कई प्रचारक भी ऐसी ही अनुचित शिक्षा देते हैं, आप हमारे साथ आ जाओ और मैम्बरशिप ले लो। यह लोग सच्ची मसीह की कलीसिया नहीं है। कई लोग जो कम्यूनीटी चर्च के सदस्य है वे भी अपने को मसीह की कलीसिया कहते हैं।

एक और विशेष बात यह है कि ऐसे लोग भी है जो किसी भी साम्प्रदायिक कलीसिया के साथ संगति रखने को गलत नहीं मानते। मसीह की कलीसिया की स्थापना प्रेरितों के प्रचार के द्वारा पिन्तेकुस्त के दिन हुई थी। (प्रेरितों 2)। यीशु ने कहा था "जो पौधा मेरे पिता ने नहीं लगाया वह उखाड़ा जायेगा।" (मत्ती 15:13)। यीशु ने कलीसिया की एकता के लिये प्रार्थना की थी (यहून्ना 17:20, 21) साम्प्रदायिक कलीसियाओं में बड़े अच्छे लोग हैं परन्तु वे मनुष्यों की शिक्षाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते है। (मत्ती 15:8, 9) जो नये नियम के मसीह है, वे दूसरों के साथ जो साम्प्रदायिक हैं सहभागिता नहीं काते। मसीह की कलीसिया बिल्कुल भिन्न है। शायद लोग बोलें कि हम अपने को बहुत धार्मिक समझते हैं, परन्तु सच्चाई यह है कि मसीह की कलीसिया बाइबल के सिद्धान्तों पर चलती है।

एक और बड़ी विशेष बात यह है कि लोग जो अपने को मसीह की कलीसिया कहते हैं वे कुछ विशेष दिनों तथा त्योहारों को मनाते हैं। (गलतियों 4:10, 11) प्रेरित पौलुस ने ऐसे लोगों को डांटा भी था। मसीह की कलीसिया जो केवल नये नियम अनुसार चलती है वह रविवार के दिन को विशेष महत्व देती हैं मसीही लोग प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज में भाग लेते है। (मत्ती 20:7)। क्रिश्चन चर्च प्रत्येक तयोहार को मनाता है और कहता है कि हम मसीह की कलीसियां है परन्तु उनके सारे कार्य साम्प्रदायिक कलीसियाओं की तरह होते हैं।

मसीह की कलीसिया अपने चंदे को सण्डे के दिन आराधना में इक्ट्ठा करती

है परन्तु क्रिश्चन चर्च जो अपने को चर्च आफ क्राईस्ट भी कहता है कभी भी किसी भी तरह से चंदा इक्ट्ठा करता है। बाइबल कहती है सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ रख छोड़ा करे। (1 कुरि. 16:12, 2 कुरि. 9:7)।

मसीह की कलीसिया में कोई क्वायर जैसा सिस्टम नहीं है। जैसे कि लोग सामने खड़े होकर गाने गाते हैं बल्कि सब लोग पूरी कलीसिया मिलकर भजन गाती और आत्मिक गीतों को गाती है। यानी सारी कलीसिया मिलकर स्तुति करती है। हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि आराधना को हम एक सोशल प्रोग्राम बनाये बल्कि बड़ी सादगी से आराधना करनी चाहिए (यूहन्ना 4:2, 4)।

मसीह की कलीसिया ने कभी नाम नहीं बदला परन्तु कुछ लोगों ने मसीह की कलीसिया के स्थान पर अपना नाम क्रिश्चन चर्च रख लिया जबकि बाइबल कहती है तुम्हें मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार (रोमियों 16:16)। वे लोग नये नियम के अनुसार कहलाते थे वे कभी भी यह नहीं कहते थे कि हम क्रिश्चन चर्च या कम्युनिटी चर्च के हैं और वे बाइबल की बातों को बाइबल का नाम देते थे। (1 पतरस 4:11)। आज भारत में भी कई ऐसे डीनोमीनेशन विद्यमान है जो अपना नाम चर्च ऑफ क्राईस्ट रखते हैं परन्तु उनकी शिक्षाएं बाइबल अनुसार नहीं है।

कुछ लोग मसीह की कलीसिया को छोड़कर दूसरों के साथ मिल गये है उन्हें आमोस 3:3 पढ़ना चाहिए जहां लिखा है ''क्या दो जन आपस में मिलकर चल सकते है यदि वे सहमत नहीं है और बाइबल में लिखा है जो लोग कलीसिया में गलत शिक्षा देते हैं उनसे दूर रहो। (रोमियों 16:17)। आपके बारे में क्या है? क्या आप कुछ ऐसे लोगों को जानते हैं जो यह दावा करते हैं कि वे मसीह की कलीसिया के हैं परन्तु उनकी शिक्षाएं बाइबल के विपरीत हैं? जरा ध्यान रखिए यदि आप सच्ची मसीह की कलीसिया में हैं तो बाइबल को अपना मार्गदर्शक बनाकर चलिये। क्योंकि हमारा न्याय बाइबल के आधार पर होगा। (यूहन्ना 12:48)।

उद्धार का अभिप्राय

सनी डेविड

हमारी भाषा में "उद्धार" एक बड़ा ही शांतिदायक शब्द है। मनुष्य अपने मन में उद्धार पाने की इच्छा रखता है। हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, कि उसने न केवल हमें यही बताया है कि मनुष्य पापी है और एक ऐसे मार्ग पर चल रहा है जिसका अन्त सदा का नाश है, परन्तु उसने मनुष्य पर इस बात को भी प्रकट किया है कि वह किस प्रकार से अपने पापों से उद्धार प्राप्त करके अनन्त जीवन में प्रवेश कर

सकता है। एक बड़े ही ध्यान देने योग्य बात यह है, कि परमेश्वर ने मनुष्य के उद्धार की अपनी योजना को इस प्रकार से प्रगट किया है कि संसार में भोले-भाले और साधारण लोग भी उसे आसानी से समझ सकें। उसने अपने भक्तों को पवित्रात्मा के द्वारा प्रेरणा दी ताकि वे उसकी उद्धार की योजना को ऐसे-ऐसे उदाहरणों वा शब्दों के द्वारा व्यक्त करें जिनका उपयोग साधारणत: हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में होता है। परन्तु वे सब हमारा ध्यान एक ही बात के ऊपर दिलाते हैं, कि मनुष्य परमेश्वर से दूर और अलग है, क्योंकि परमेश्वर पवित्र है और मनुष्य पापी वा अधर्मी है (यशायाह 59:1-2); और फिर हम देखते हैं, कि किस प्रकार से दया और अनुग्रह से परिपूर्ण अपने पुत्र यीशु के द्वारा हमें वह बचाता है।

इस विषय में सबसे पहिला उदाहरण जो हम लेते हैं वह इस प्रकार का है, जिस में हम परमेश्वर को एक न्यायी के समान और मनुष्य को एक अपराधी और व्यवस्था के तोड़ने वाले के समान पाते हैं। अपने अपराधों के कारण मनुष्य दोषी है, और इस कारण उसे अवश्य ही नरक का दण्ड मिलेगा। परन्तु जब बचने की कोई आशा न रही, तो निष्पाप का निष्कलंक यीशु ने मनुष्य के पापों को अपने ऊपर लेना स्वीकार कर लिया, उसने मनुष्य की जगह अपने आप को मरने के लिये दे दिया, और मनुष्य को अनन्त मृत्यु के दण्ड से बचा लिया। पवित्र वचन कहता है, "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा.... सो जब हम अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे?" (रोमियों 5:6-9)। मनुष्य परमेश्वर के सामने एक अपराधी के समान खड़ा था, जिस पर दण्ड की आज्ञा हो चुकी थी, परन्तु यीशु ने अपनी इच्छा से मनुष्य के अपराधों को अपने ऊपर ले लिया था। इसलिये, मनुष्य यीशु के क्रूस पर बड़े लोहू के द्वारा धर्मी ठहरा, इसलिये अब परमेश्वर के सामने वह एक अपराधी के समान नहीं, परन्तु एक धर्मी के समान आता है। परमेश्वर की दृष्टि में वह अब एक अपराधी नहीं परन्तु एक धर्मी मनुष्य है, क्योंकि उसके अपराधों का दण्ड भरा जा चुका है; और उस व्यक्ति के उस विश्वास के कारण जो यीशु मसीह में है, परमेश्वर अब उस मनुष्य के साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसे कि उसने कभी कोई पाप किया ही न हो। इसीलिये लिखा है, "सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पद दण्ड की आज्ञा नहीं।" (रोमियों 8:1)। अर्थात यीशु मसीह में होने के कारण वह मनुष्य परमेश्वर की नजर में एक नई सृष्टि है, एक नया मनुष्य है।

इस सच्चाई को भी प्रभु यीशु ने एक जगह बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रगट करके इस तरह बताया; कि एक मनुष्य के दो पुत्र थे। उन में से एक ने अपने पिता की संपत्ति का भाग उससे पा लिया, और फिर वह संपत्ति का अपना भाग लेकर एक दूर देश में जा बसा। वहां उसने सारा धन बुरे कामों में और कुकर्म में उड़ा दिया, और कुछ ही दिनों में वह बिल्कुल कंगाल हो गया। जब उसके सारे कपड़े फट गए, और वह भूखा मरने लगा, और यहां तक कि उसका जीवन पशुओं का सा हो गया, तब उसे चेत आया कि मैंने अपने पिता का विरोध करके कितना भारी अपराध किया है।

और तब उसने अपने मन में पश्चाताप करने का निश्चय किया, सो उसने कहा, "मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूंगा, कि पिता जी मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाई रख ले।" और जब वह इस निश्चय के साथ अपने पिता के घर की ओर चला, तो अभी वह दूर ही था, कि उसका पिता जो प्रतिदिन उसकी राह देखा करता था, उसे देखकर दौड़कर उसके पास आया, उसने उसे गले लगाया, उसे चूमा, और अपने दासों को आज्ञा देकर कहा, कि उसे अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर पहिनाओ और बहुत बढ़िया सा भोजन तैयार करो ताकि हम सब मिलकर आनन्द मनाएं, "क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है, खो गया था, अब मिल गया है।" (लुका 15:11-24)।

सो जब कोई मनुष्य मसीह में होकर परमेश्वर के पास आता है, तो परमेश्वर उसके साथ ठीक ऐसा ही व्यवहार करता है। वह उसे दोषी नहीं ठहराता, परन्तु प्रेम के साथ उसे यह कहकर स्वीकार करता है, कि मेरा यह पुत्र जो पहिले मर गया था, फिर जी गया है: यह खो गया था, अब मिल गया है।

उद्धार प्राप्त करने का अभिप्राय न केवल धर्मी ठहरने से है, परन्तु इसका अर्थ दो विरोधी पक्षों में मेल की स्थापना होना भी है। उद्धार के विषय में इस दृष्टिकोण से विचार करने पर हमारा ध्यान इस बात पर जाता है कि मनुष्य परमेश्वर से दूर होकर उसके विरोध में अपना जीवन बिता रहा है। उसकी आवश्यकता है कि वह परमेश्वर के साथ अपने टूटे संबंध को फिर से स्थापित करे, और परमेश्वर का मित्र बन जाए। परन्तु यह किस प्रकार से हो सकता है? पाप के रहते हुए मनुष्य किस तरह से अपने घिनौने हाथ परमेश्वर की ओर मित्रता के लिये बढ़ा सकता है? या कौन सी ऐसी वस्तु है जिसे मनुष्य परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये उसके पास ला सकता है? मनुष्य की इस भारी आवश्यकता को स्वयं परमेश्वर यह कहकर पूर्ण करता है कि "पिता की प्रसन्नता इसी में है कि.... क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा.... अपने साथ मेल मिलाप कर ले।" (कुलुस्सियों 1:19-20)। क्योंकि यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा बीच में आए उस बैर को नाश कर दिया जिसके कारण मनुष्य परमेश्वर का शत्रु हो गया था। (इफिसियों 2:16) सो जब हम यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करते हैं तो इसका अर्थ यह है कि हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो जाता है।

फिर इसका अर्थ यह भी है, कि मनुष्य का एक बड़ा कर्जा, जिसे चुकाने के लिये उसके पास सामर्थ न थी, उसे क्षमा किया गया। इस बात को और भी सरल ढंग से समझाने के अभिप्राय से प्रभु यीशु ने एक उदाहरण देकर यूं, कहा, कि एक राजा था, जब वह लेखा लेने लगा, तो उसके सामने एक जन लाया गया जिसने राजा का कई लाख रुपए का कर्जा चुकाना था। यदि राजा चाहता तो उस व्यक्ति को भारी दण्ड दे सकता था, परन्तु उस व्यक्ति के क्षमा याचना करने पर, उसने उसका सारा कर्जा क्षमा कर दिया। (मत्ती 19:23-27)। मनुष्य अपने पापों के कारण परमेश्वर का कर्जदार था। परन्तु यीशु मसीह में उसने हमारा सारा कर्जा माफ कर दिया। परमेश्वर

का वचन इसे पापों की क्षमा कहता है। यह कर्जा इतना बड़ा था कि इसे हम स्वयं कभी भी नहीं चुका सकते थे। यह कर्जा धन वा सम्पत्ति से नहीं चुकाया जा सकता था, क्योंकि परमेश्वर का वचन घोषित करके कहता है कि "बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती।" (इब्रानियों 9:22)। और मनुष्य पाप से अशुद्ध था। और "यह अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे।" (इब्रानियों 10:4)। इसलिये परमेश्वर के पुत्र, यीशु का लोहू बहाया गया ताकि मनुष्य के पाप क्षमा किए जाएं। (मत्ती 26:28)।

और फिर उद्धार का अर्थ छुटकारे से भी है। कहा जाता है, कि रोमी साम्राज्य के भीतर लगभग आधी प्रजा दासत्व में थी। दासत्व एक ऐसी प्रथा थी जिस से आज हम परीचित नहीं है। परन्तु उस समय यह जीवन की दिन-प्रतिदिन की एक सच्चाई थी। प्रत्येक दास अपने मन में उस दिन की बड़ी लालसा के साथ प्रतीक्षा करता था कि जब वह अपने स्वामी की संपत्ति न रहकर स्वतंत्र हो जाए। अकसर ऐसा किसी व्यक्ति की दया के फलस्वरूप ही होता था, जब वह दास के स्वामी को दास की उचित कीमत देकर उसे स्वतंत्र करा देता था, अन्यथा वह दास एक दास ही रहता था, और उसके स्वामी को उस से कोई लाभ न होता था तो वह उसे किसी और के हाथों बेच देता था। परन्तु प्रत्येक मनुष्य को पाप में अपना जीवन बिता रहा है शैतान का दास है। क्योंकि "जो कोई पाप करता है" प्रभु यीशु ने कहा, "वह पाप का दास है।" (यूहन्ना 8:34)। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने हम से ऐसा प्रेम किया, कि हमें पाप के दासत्व से छुड़ाने के लिये उसने अपने एकलौते पुत्र यीशु को दे दिया (यूहन्ना 3:16), ताकि क्रूस पर बहे उसके लोहू के द्वारा हमारे पापों की कीमत चुकाई जाए, और हमारा छुटकारा हो जाए। इसी कारण परमेश्वर का वचन कहता है कि "दाम देकर मोल लिये गए हो" (1 कुरिन्थियों 6:20)। "क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल चलन जो बाप दादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी, सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।" (1 पतरस 1:18, 19)।

सो यदि हम यीशु मसीह में है, तो उसके द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरते हैं; उसके द्वारा हमारा परमेश्वर के साथ मेल होता है; उसमें पापों की क्षमा और छुटकारा प्राप्त होता है। (कुलुसिस्यों 1:13, 14)। "तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रह कर क्यों कर बच सकते हैं?" सो पवित्र वचन कहता है कि "यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिन को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलायेगा।" (प्रेरितों 2:39)। अर्थात, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों 2:38)। उद्धार परमेश्वर का एक दान है। क्या आप उसे प्राप्त करने के लिये विश्वास और आज्ञा पालन के साथ उसके पास न आएंगे? मेरी आशा है कि आप इतने बड़े उद्धार से वंचित रहना न चाहेंगे।

यीशु में होने का क्या अर्थ है?

जे. सी. चोट

अपने इस अध्ययन में हम यह देखेंगे कि यीशु में होने का क्या अर्थ है? बाइबल के ऐसे बहुत से पद हैं जो यह बताते हैं कि मसीह में होने का अर्थ क्या है? प्रेरित पौलुस कहता है कि, ''और जैसे आदम में सब मरते हैं वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।'' (1 कुरि. 15:22) फिर वह कहता है ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान का संबंध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है।'' (2 कुरि. 2:14)। फिर 2 कुरि. 5:17 में पौलुस कहता है, ''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई देखो वे सब नई हो गई है।'' हमारे मन सच्चाई और पवित्रता से भरे होने चाहिए जैसे लिखा है, ''परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएं।'' (2 कुरि. 11:3)।

बाइबल हमें बताती है कि यीशु मसीह में होने का क्या अर्थ है? और प्रेरित पौलुस इससे मिलती जुलती एक और बात कहता है जिसके विषय में हम इफिसियों 1:10-14 में पढ़ते हैं और यहां इस प्रकार से लिखा है, ''कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबंध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है सब कुछ वह मसीह में एकत्र करें। उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराये जाकर मीरास बने कि हम जिन्होंने पहिले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हो। और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है और जिस पर तुमने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी है। वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का कहना है कि उसकी महिमा की स्तुति हो (इफि. 1:10-14) और 1 थिक्स. 4:16 से हम पढ़ते हैं ''क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे।''

अब यह जितनी भी बाइबल की आयतें हमने देखीं, इन सब में एक समानता है अर्थात यह सब आयतें हमें मसीह के अन्दर होने के विषय में बात के लिये विचार करने पर हमारा ध्यान दिलाती है कि मसीह में होने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि क्या आत्मिक रूप से हम मसीह में है कि नहीं? मसीह में होने का अर्थ है उसके उद्धार को प्राप्त करना, मसीह में एक नई सृष्टि बनना है। मसीह में विजय प्राप्त करना तथा एक नई आशा को जीवन में रखना। प्रेरित यह भी कहता है कि यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है तथा तमाम आत्मिक आशिषें हमें मसीह में मिलती है। (2

कुरि. 5:10, इफि. 1:3) इफिसियों की कलीसिया को पौलूस बता रहा है कि मसीह में सारी आत्मिक आशिषें हमें प्राप्त होती है। यह आत्मिक आशिषें क्या हैं?

यह आशीषें हैं पापों से मुक्ति, पवित्र आत्मा का दान, भाईयों से संगति कलीसिया में संगति, प्रार्थना करने की आशिष तथा अनन्त जीवन की आशा। यह सारी आशिषें केवल उन्हीं को प्राप्त होंगी जो सुसमाचार की आज्ञाओं को मानकर प्रभु यीशु में आ गए हैं। यानि इसका अर्थ, यह हुआ कि जिन्हें ये आशीषें प्राप्त नहीं है, यदि उन्हें भी यह आशिषें प्राप्त हो जायें तो फिर मसीह में होने की क्या आवश्यकता है?

अब रोम में जो मसीही लोग थे उन्हें पौलुस लिखते हुए कहता है, ''सो अब जो मसीह यीशु में है उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं; क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।'' (रोमियों 8:1) अब पौलुस यहां इस बात पर जोर दे रहा है कि मसीह में होना कितना आवश्यक है। उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं है क्योंकि वे उद्धार पाये हुए हैं, क्योंकि वे मसीह में सुरक्षित हैं। उनके लिये अब शर्त यह है कि वे आत्मा के अनुसार चले तथा शरीर के अनुसार न चलें। जो लोग आत्मा अनुसार चलते हैं वे संसार की बुराईयों से बचकर रहते हैं। ऐसे लोग आत्मा द्वारा बताई गई बातों पर चलते हैं। जो लोग आत्मा अनुसार चलते हैं परमेश्वर उनकी सहायता करता है।

अब अगला प्रश्न यह उठता है कि मसीह यीशु में हम किस प्रकार से आ सकते है? क्या कोई व्यक्ति केवल विश्वास करके यीशु में आ सकता है? क्या कोई केवल यीशु का अंगीकार करके उसमें आ सकता है? या केवल एक अच्छा जीवन व्यतित करने से भी हम मसीह में नहीं हो सकते? प्रेरित पौलुस हमें बताता है, ''क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया और यही पौलूस कहता है ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।'' (गलतियों 3:26, 27)। इन दो आयतों में हम यही देखते हैं कि प्रभु यीशु में आने के लिये बपतिस्मा लेना आवश्यक है। यीशु में आने का कोई और तरीका नहीं है। यदि कोई और तरीका होता तो प्रेरित हमें बताते कि आप दूसरे तरीके से मसीह में आ सकते हो। परन्तु उन्होंने तथा पौलुस ने ऐसा कोई और तरीका बचन में हमें नहीं बताया। पौलुस ने ऐसा भी नहीं सिखाया कि आप अभी मसीह में आने के लिये विश्वास कर लो और बाद में जब दिल करे तो बपतिस्मा ले लेना। बात यह है कि मनुष्य सच्चाई को मानना नहीं चाहता।

पौलुस बताता है कि एक देह या कलीसिया होने के लिये बपतिस्मा आवश्यक है। (1 कुरि. 12:13)। यानि बपतिस्मा हमें मसीह में मिलाता है। जब कोई व्यक्ति बपतिस्मा ले लेता है तो वह उद्धार पाकर मसीह के अन्दर आ जाता है। मेरा आज आपसे प्रश्न यह है कि क्या आप मसीह में है?

आप बाइबल पर भरोसा कर सकते हैं

सलवाडोर बी. केरियेगा

कुछ लोगों को आश्चर्य होता है कि बाइबल में जो आज हमारे पास है, क्या हम उस पर भरोसा कर सकते हैं। उनका कहना है, "हम कैसे बता सकते हैं कि बहुत पहले किसी ने इसे दोबारा लिख कर इसे बदला है कि नहीं।" आपके मन में भी यही विचार आया होगा। इस छोटे से लेख में हम आपको फिर से यकीन दिलाना चाहेंगे कि बाइबल के ऊपर भरोसा किया जा सकता है।

पहली बात तो यह है कि बाइबल परमेश्वर का वचन होने का दावा करती है। इसे धार्मिक लोगों ने नहीं बनाया है। महान प्रेरित पौलुस ने घोषणा की थी कि "सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है"' (2 तीमुथियुस 3:16)। यीशु ने अपने चेलों को यकीन दिलाया कि "बोलने वाले तुम नहीं हो, परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है" (मत्ती 10:20)। पतरस ने माना कि "कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:21)।

दूसरा, तीसरी सदी में मिली बाइबल की पाण्डुलिपियां सदियों से अभी तक ज्यों की त्यों हैं। यह सच है कि थोड़ी बहुत भिन्नताएं हैं, जैसे मात्राओं में, खो चुके शब्दों और कई खो चुके वाक्यों की। परन्तु वे बहुत से छोटी हैं उनसे उद्धार दिलाने वाला बाइबल का संदेश किसी प्रकार बदल नहीं गया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि बाइबल कितनी पुरानी है और इस पर कितना सताव हो चुका है, आज हमारे पास 5000 से अधिक यूनानी पाण्डुलिपियां उपलब्ध होना एक बहुत बड़ी संख्या है।

बाइबल पर भरोसा करने का तीसरा कारण इसके पन्नों पर मिलने वाला जीवन को बदलने वाला संदेश है। यह आशा, विश्वास, शांति, आनन्द और उद्धार की पेशकश करती हैं और यह तूफान के बीच सहारा, निर्बल के लिए बल और अंधकार में रहने वालों के लिए ज्योति देती है। बाइबल ने सदियों से और पीढ़ियों से लाखों करोड़ों लोगों की सेवा की है। इसने उनकी सतावों, परीक्षाओं और कलेशों से निकलने में मदद की है। बाइबल ने उन्हें विजयी जीवन जीने में अगुआई की है।

आप भी बाइबल से सामर्थ, बल और समझ प्राप्त कर सकते हैं इसलिये इसे पढ़ें, इसका अध्ययन करें और इस पर मनन करें।

यह हमेशा से था

फ्रांसेस फ़र

हर चीज जो सृजी गई है उसे हमारे उद्‌भुत, सामर्थी परमेश्वर ने सृजा है। वह अंतहीन अंतरिक्ष को, पृथ्वी के अंदर क्या-क्या है, हवा कैसे चलती है, और सूक्ष्म अण्डे से पुरुष या स्त्री के रूप में मानवीय शरीर का कैसे आरंभ होना जैसी सब बातों को जानता है। आरंभ से, उसे यह भी मालूम था कि हम कन्फ्यूज होंगे और हमें कभी समझ में नहीं आएगा। उसने उन पुस्तकों को, जो उसे मालूम था कि हमें जानना आवश्यक है, विशेष लोगों से लिखवाया। इन सब बातों को लिखकर एक पुस्तक, बाइबल में रख दिया गया है।

बाइबल बड़ी ही विशेष पुस्तक है और इसे बड़े ध्यान से पढ़कर हम इसमें से बहुत सी बातों को जान सकते हैं। बाइबल को पढ़ना और यह देखना कि परमेश्वर हम से कितना प्रेम करता है, आवश्यक है। उसने हमसे इतना प्रेम किया कि हमें स्वर्ग में ले जाने का मार्ग बनाने के लिए, यीशु को भेज दिया।

ऐसा नहीं है कि बाइबल का अध्ययन करने के बाद हमें परमेश्वर और उसकी सृष्टि की हर बात समझ में आ जाए। 2 पतरस 1:3 हमें बताता है कि जीवन और भक्ति से वास्तव रखने वाली हर बात प्रकट कर दी गई है। इसका अर्थ यह हुआ कि हमें मसीह बनने से लेकर स्वर्ग में जाने के लिये जो भी जानना आवश्यक था, उसे बाइबल में लिखा दिया गया है।

बाइबल पढ़ना मनोरंजक भी हो सकता है। कई बार हम कई कहानियों को इतनी बार पढ़ या सुन चुके होते हैं कि हमें लगता है कि हमें उनकी हर बात पता है। फिर एक दिन, उसी कहानी को दोबारा से पढ़ने पर हमें कोई बात मिलती जिसका हमें कभी पहले पता नहीं था। यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर के बारे में हमारी समझने और ज्ञान में और बढ़ोतरी हो गई है। ये सब बातें पहले से थी परन्तु हमें ही उनकी समझ नहीं थी।

इतिहास की पुस्तकों से हमें पता चलता है कि बहुत पहले लोगों को यह लगता था कि पृथ्वी चपटी है। कइयों को यह लगता था कि यदि कोई सतर्क न हो और वह किनारे से नीचे की ओर गिर जाए जहां कुछ नहीं है तो नीचे से नीचे ही गिरता रहेगा। भजन 58:3 को पढ़ने पर ("पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों ने हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार देखा है") और भजन 135:7 ("वह पृथ्वी की छोर से कोहरे को उठाता है") पढ़कर कोई इससे सहमत हो सकता है। परन्तु यशायाह 40:22 पृथ्वी का वर्णन का एक अलग ढंग से, यानी उस ढंग से करता है, जैसे अंतरिक्ष यात्रियों के फोटो में उसका सही सही विवरण दिया गया है। यशायाह परमेश्वर के लिए कहता है कि "यह वह है जो पृथ्वी के घेरे के ऊपर आकाशमण्डल पर विराजमान है।"

आरंभिक नाविकों ने समुद्र के बीच लहरों की खोज की जो विशेष दिशाओं की ओर बहती बड़ी-बड़ी नदियों के जैसी थी। यदि जहाजों को इन लहरों में चलाया जाए तो वे जहाजों के लिए कम ईंधन या हवा के रुख के साथ अधिक तेजी से चल सकते हैं। दाऊद ने "समुद्र के मार्गों" में तैरने वाली मछलियों के बारे में पहले से ही बता दिया था (भजन 8:8)।

कुछ साल पहले किसी ने ध्यान दिया कि दक्षिणी अमेरिका का पूर्वी किनारा अफ्रीका के दक्षिण पश्चिमी भाग से बड़े अच्छे ढंग से मेल खाता है। फिर यह ध्यान दिया गया कि पृथ्वी के अन्य भाग, जो अब एक दूसरे से कई-कई मील दूर हैं, पहले एक दूसरे से जुड़े हुए होंगे। उत्पत्ति 1:9 यह संकेत देता है कि सृष्टि की रचना के समय जल को एक जगह इकट्ठा किया गया था और सूखी भूमि दिखाई देने लगी थी, वह भी एक साथ।

इस्राएली लोग परमेश्वर के खास लोग थे और उसने उनकी हर आवश्यकता का ध्यान रखा था। कई बार उन्हें लगता था कि परमेश्वर दूर चल गया है और वे इस बात से परेशान हो जाते थे कि वह इतना पास नहीं है कि उसे उनकी आवश्यकताओं का पता चल सके। अपनी पुस्तक में यशायाह नबी ने लोगों से "अपने परमेश्वर को देखने" को कहा। यशायाह 40 में देखें और वहां यशायाह द्वारा परमेश्वर के किए गए वर्णन को देखें।

पुराने नियम में हम दाऊद के बारे में पढ़ सकते हैं। वह परमेश्वर से बहुत प्रेम करता था और उसकी महिमा गाया करता था। उसने परमेश्वर के आश्चर्य और सामर्थ के कई गीत लिखे हैं। बाइबल में भजनों की पुस्तक में से हम दाऊद के गीतों को पढ़ सकते हैं। अपना पसंदीदा अध्याय ढूंढे या फिर भजन 100 को या 104 को पढ़ें।

परमेश्वर की महानता के बारे में पढ़ने के बाद लोगों के आनन्द के लिए परमेश्वर उस पर रखी गई सुन्दर वस्तुओं पर ध्यान देते हुए एक फैमिली वाक पर चलें। उन चीजों की सूची बनाएं जो परिवार के हर सदस्य के लिए ख़ास हैं।

घर में वापस आकर, एक दूसरे के साथ बांटने और प्रार्थना में समय बिताएं। परमेश्वर के कभी न खत्म होने वाले आश्चर्य को ढूंढ़ते रहें और उन पर ध्यान देने की कोशिश करें। उसने न केवल हमारी आवश्यकताओं को पूरा किया है, बल्कि और भी बहुत सी चीजें दी हैं, जो सुन्दर और हमारे आनन्द के लिए हैं। परमेश्वर की पुस्तक बाइबल को पढ़ना कभी बोर करने वाला नहीं होता। इसकी कहानियां आज भी वैसे ही नई और प्रासंगिक हैं जैसी वे इल्हाम प्राप्त लेखकों के द्वारा उन्हें लिखे जाने के समय थीं। मसीही व्यक्ति ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता हैं, त्यों-त्यों उसे न खत्म होने वाले स्तर और गहराइयां मिलते हैं। सचमुच में हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सब कुछ देखता, सब कुछ जानता और सबसे जबर्दस्त है। बाइबल हमें ऐसा ही बताती है।

क्यों

पाप, तकलीफ और मात के
इस संसार से गुजरते हुए
मैं अपने चारों तरफ लोगों को
उन चीजों को पाने की हसरत
करते हुए देखती हूं
जिनको वे पा नहीं सकते,
और मन में मेरे वही सवाल आता है
जो सदियों पहले मसीह ने कहा था कि:
इन सबका क्या फायदा अगर इंसान
अपनी ही आत्मा की हानि उठाए?

– ***बैटी बर्टन चोट***

प्रार्थना

जैरी बेट्स

प्रार्थना स्पष्ट रूप से परमेश्वर को हमारी आराधना का एक महत्वपूर्ण भाग है और बाइबल बार-बार इसके महत्व पर जोर देती है। प्रार्थना से संबंधित सामान्य वचनों पर ध्यान दें : "फिर उसने इसके विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए, उनसे यह दृष्टांत कहा" (लूका18:1)। "आशा में आनन्दित रहो; क्लेश में स्थिर रहो; प्रार्थना में नित्य लगे रहो" (रोमियों 12:12)। "और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसीलिए जागते रहो, कि पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती किया करो" (इफिसियों 6:18)।

प्रार्थना क्या है?

हमें सबसे पहले और सबसे बढ़कर यह याद रखना आवश्यक है कि प्रार्थना एक माध्यम है जिसके द्वारा हम परमेश्वर से बात करते हैं। यह परमेश्वर में पूरे भरोसे के साथ, परमेश्वर के सामने होती है। यह निष्कपटता से और दिल से होनी आवश्यक है। प्रार्थना झाड़-फूक करने वालों के जादू दिखाने की तरह केवल सही-सही शब्द उच्चारण नहीं होना चाहिए। यह हमारे व्यवहार की विशेषता भी होनी चाहिए। 1 थिस्सलनीकियों 5:17 में पौलुस ने लिखा कि "हमें निरन्तर प्रार्थना करनी चाहिए।" यकीनन पौलुस यह नहीं कह रहा है कि हम अपने मनों में प्रार्थना करते हुए चौबीस घण्टे कुछ बोलते रहें। निरन्तर प्रार्थना करने का अर्थ केवल इतना है कि परमेश्वर हमारे मनों से कभी दूर नहीं होता। इसलिए हमारे हृदय तथा हमारे जीवन और हमारे मन ऐसे होने चाहिए कि हमारे जीवनों की पहचान प्रार्थना करने वाले के रूप में हो। हर समय हम अगुआई, सहायता आदि के लिए खामोशी से प्रार्थना करते हुए परमेश्वर

से छोटी सी प्रार्थना कर सकते हैं। प्रारंभिक कलीसिया प्रार्थना में लौलीन रहती थी (प्रेरितों 2:42)।

प्रार्थना भौतिकवाद और स्वार्थ के लिए जादूई फार्मूला या शॉर्टकट नहीं है। बेशक परमेश्वर ने अपने लोगों की प्रार्थना सुनने का वचन दिया है (मत्ती 21:22), परन्तु हमें याद रखना आवश्यक है कि हर बात उसकी इच्छा के अनुसार हो। याकूब 4:1-6 में याकूब ने कुछ मसीही लोगों की बात की जो परमेश्वर से मांगते थे परन्तु उन्हें मिलता नहीं था और ध्यान दिलाया कि उनकी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिलता था क्योंकि उनकी प्रार्थना स्वार्थ भरी होती थीं, जिनमें ऐसी बातें होती थीं जो केवल अपने भोगविलास पर इस्तेमाल के लिए हों। इसलिए हमें प्रार्थनाओं को ऐसे नहीं देखना चाहिए जैसे वे परमेश्वर के ब्लैंक चेक हो और हम मांगेंगे वह हमें मिल जाएगा। प्रार्थना कोई अल्टीमेटम नहीं है। अल्टीमेटम उसे कहते हैं जो परमेश्वर के साथ यह कहते हुए सौदेबाजी करने की कोशिश होती है "यदि तू मुझे यह या वह आशीष देगा तो मैं तेरी सेवा करने लगूंगा।" परमेश्वर ने जो कुछ हमारे लिए पहले से किया है उसके आधार पर वह हमारी सेवा का हकदार है और हम किसी प्रकार से हमारी सेवा के खोखले वायदे करके परमेश्वर से और आशीष पाने के लिए उस पर दबाव नहीं डाल सकते। न ही हमें प्रार्थना को केवल आपातकाल के लिए उपयोगी चीज की तरह देखना चाहिए। परेशानियां आनेपर बहुत से लोग प्रार्थना में परमेश्वर की ओर लौट आते हैं। परन्तु जब परेशानियां खत्म हो जाती हैं तो वे परमेश्वर को भूल जाते हैं और पहले की तरह अपना जीवन बिताने लगते हैं।

प्रार्थना किसे करनी चाहिए?

अधिकतर लोग फुर्ती से यह उत्तर देंगे कि सबको प्रार्थना करनी चाहिए और चाहे मैं किसी को भी प्रार्थना करने से निराश नहीं करूंगा परन्तु हमें यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अंत में प्रार्थना परमेश्वर की संतान के लिए सुरक्षित आशीष है। जो लोग परमेश्वर के आत्मिक परिवार में नहीं है उनसे यह वायदा नहीं किया गया कि परमेश्वर उनकी विनतियों को सुनेगा। "जो विलम्ब से क्रोध करने वाला है वह बड़ा समझवाला है, परन्तु जो अधीर है, वह मूढ़ता की बढ़ती करता है।" (नीतिवचन 14:29)। 1 पतरस 3:12 में पतरस ने भजन संहिता 34 में से ये शब्द दोहराए, "क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उसकी विनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है।" इनमें और वचन भी जोड़े जा सकते हैं परन्तु याद रखें कि ये सभी वचन जो प्रार्थना पर लिखे गए हैं परमेश्वर के लोगों या मसीही लोगों के लिए हैं। इसके अलावा केवल उन्हीं मसीही लोगों को प्रार्थना करने की आशीष है जो धार्मिकता से जीवन बिता रहे हैं। 1 यूहन्ना 3:22 में यूहन्ना ने लिखा है, "और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उससे मिलता है; क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं।" ध्यान दें कि यूहन्ना लिखता है कि जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं उनसे वायदा किया गया है कि परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा। जिसका अर्थ यह हुआ कि जो आज्ञाकारी जीवन नहीं बिताते हैं उन्हें ऐसी प्रतिज्ञाएं नहीं मिलती है।

मसीही लोगों को एक दूसरे के लिये प्रार्थना करने की आज्ञा दी गई है। "इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है" (याकूब 5:16)। ये बातें सब मसीही लोगों को लिखी गई हैं और हमें बताया गया है कि धर्मी व्यक्ति की प्रार्थना में बड़ी सामर्थ होती है, न कि केवल किसी प्रचारक या प्रीस्ट की प्रार्थना में। हमें कहीं भी किसी प्रीस्ट के सामने पापों का अंगीकार करने की आज्ञा नहीं दी गई है और न ही ऐसा कोई संकेत है कि किसी प्रचारक या प्रीस्ट की प्रार्थनाओं में किसी भी अन्य व्यक्ति की प्रार्थनाओं से अधिक शक्ति या प्रभाव होता है। महत्वपूर्ण बात व्यक्ति का जीवन है न कि यह कि वह किस पद पर है। प्रार्थना आज्ञा मानने का बदल भी नहीं है। ऐसे कई समय आए हैं जिनमें परमेश्वर ने किसी से वास्तव में यह कहा हो कि प्रार्थना करना बंद करे (उदाहरण निर्गमन 14:15; प्रेरितों 22:16)।

1 तीमुथियुस 2:8 में पौलुस लिखता है, "सो मैं चाहता हूं, कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें।" पुरुषों के लिए यहां इस्तेमाल हुआ शब्द केवल नर के लिए है। सामान्य रूप में स्त्रियों या मनुष्य जाति के लिए अन्य शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। इसलिए पौलुस मण्डली में या सार्वजनिक प्रार्थना में अगुआई केवल पुरुषों द्वारा किए जाने तक सीमित करता है। लोग अक्सर प्रार्थना में हाथ उठाने के बारे में सवाल करते हैं। हाथ उठाकर प्रार्थना करने में बेशक कोई बुराई नहीं है पर इसकी आज्ञा नहीं दी गई है। वचन में लोगों के अलग-अलग अवस्था में प्रार्थना करने की बात की गई है परन्तु अधिकतर में उनके घुटनों के बल होने या पूरी तरह से झुकने की बात मिलती है। हमारी प्रार्थना में शारीरिक मुद्रा का कोई महत्व नहीं है। इसके बजाय पौलुस हमारे जीवनों के पवित्र होने पर जोर दे रहा है। प्रार्थना करने वाले पुरुषों का जीवन पवित्र यानी आज्ञाकारी जीवन होना आवश्यक है।

हमें किसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए?

हमारी प्रार्थनाओं में बहुत सी बातें होनी चाहिए। सबसे बढ़कर हमें परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए। महिमा के योग्य परमेश्वर और केवल परमेश्वर है। इससे जुड़ी बात उसकी आशिषों के लिए चाहे वे शारीरिक हों या आत्मिक, हमारा धन्यवाद देना आवश्यक है। "किसी भी बात की चिंता मत करो, परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शांति, जो समझ के बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी" (फिलिप्पियों 4:6-7)।

"प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उसमें जागृत रहो" (कुलुस्सियों 4:2)। ध्यान दें कि पौलुस ने हमारी प्रार्थनाओं में निजी विनतियां भी शामिल की। आवश्यक नहीं कि व्यक्तिगत आशिषों के लिए परमेश्वर से मानना स्वार्थ या पापपूर्ण हो। हमें परमेश्वर से अगुआई और समझ भी मांगनी चाहिए (याकूब 1:5)। हमें दूसरों के लिए जैसे निर्धनों, बीमारों, राजाओं, अन्य मसीही लोगों आदि के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए (याकूब 5:16)। हमारी प्रार्थनाओं का खास तौर पर एक आवश्यक

भाग अंगीकार यानी अपने विश्वास का और अपने पापों का अंगीकार दोनों है। इसलिए 1 यूहन्ना 1:8 कहता है कि यदि हम अपने पापों को मान लें तो परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करने में विश्वासयोग्य है। स्पष्टतया अंगीकार के साथ मन फिराने और क्षमा के लिए विनती करना भी जुड़ा हुआ है। परमेश्वर वफादार और भरोसे के योग्य है। परमेश्वर ने हमसे क्षमा करने की प्रतिज्ञा की है और हम भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर ने जो वचन दिया है उसे वह पूरा करेगा। फिर भी हमें यह याद रखना आवश्यक है कि अगर हम दूसरों को क्षमा नहीं करते हैं तो परमेश्वर भी हमें क्षमा नहीं करेगा (मरकुस 11:26)।

हमें प्रार्थना कैसे करनी चाहिए?

हमारी प्रार्थना का सबसे महत्वपूर्ण भाग हमारा व्यवहार है। हमारी प्रार्थना परमेश्वर में मजबूत विश्वास और सच्चे मन से होनी आवश्यक है। "ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं पर उनका मन मुझ से दूर रहता है" (मत्ती 15:8)। सच्चे मन में दीनता और सही इरादे से प्रार्थना करना शामिल है। लम्बी प्रार्थनाएं करना आवश्यक नहीं है। मत्ती 6:5-8 में यीशु ने अन्य जातियों को उनकी बकबक के लिए उनकी भर्त्सना की थी। बार-बार एक ही बात कहते रहना हमारी प्रार्थना को अधिक प्रभावशाली नहीं बना देता। बड़े-बड़े विश्वासी लोगों को रिकॉर्ड की गई प्रार्थनाएं बड़े कम शब्दों में मिलती है। हमें परमेश्वर से आदर सहित प्रार्थना करनी चाहिए। हमें याद रखना आवश्यक है कि परमेश्वर तो परमेश्वर हैं और हम केवल मनुष्य है। "बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन से कोई बात उतावली से परमेश्वर के सामने निकालना, क्यांकि परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर है; इसलिये तेरे वचन थोड़े ही हों" (सभोपदेशक 5:2)।

परमेश्वर से प्रार्थना हमारे मध्यस्थ यीशु के नाम में करनी चाहिए। पौलुस ने लिखा है, "क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है" (1 तीमुथियुस 2:5)। मध्यस्थ उसे कहते हैं जो दो पक्षों को मिलवाता है जो कि यहां पर परमेश्वर और मनुष्य हैं। अच्छा मध्यस्थ दोनों पक्षों की परिस्थितियों को जानता है इसलिए यीशु से बेहतर मध्यस्थ नहीं हो सकता है। वह परमेश्वर को जानता है क्योंकि वह परमेश्वर है; वह मनुष्य को जानता है क्योंकि वह मनुष्य के रूप में देहधारी हुआ था (फिलिप्पियों 2:5-11)। पौलुस ने हमें यह भी आश्वस्त किया है कि परमेश्वर से की गई हमारी प्रार्थनाओं में पवित्र आत्मा का भी योगदान है। "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते हैं कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करता है; और मनों का जांचने वाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा अनुसार विनती करता है" (रोमियों 8:26-27)। ये आहें किसी प्रकार की आत्मिक भाषा नहीं है जिसका केवल परमेश्वर को ही पता हो कि वे मनुष्य की नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा की आहें हैं। पवित्र आत्मा क्या करता है बेशक हम उसकी सब बातों को नहीं समझ सकते पर हम इतना सुनिश्चित हो सकते हैं कि आत्मा और मसीह हमारी विनतियों

को लेकर परमेश्वर के सामने उसकी इच्छा के अनुसार प्रस्तुत करते हैं। हमारे लिए यह बड़ा प्रोत्साहन देने वाला होना चाहिए।

प्रार्थना यह संकेत भी है कि अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर के लिए हम जो कर पाएंगे, वह करेंगे। प्रार्थना बिना कुछ दूसरों की सहायता करने का आसान तरीका नहीं है। याकूब 2:15-16 में याकूब ने इस व्यवहार के विरूद्ध चेतावनी दी, "यदि कोई भाई या बहिन नंगे उघाड़े हों, और उन्हें प्रति दिन भोजन की घटी हो। और तुममें से कोई उनसे कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दे तो क्या लाभ?" अन्य शब्दों में किसी के लिए केवल प्रार्थना कर देना उसके किसी काम का नहीं है बल्कि जरूरतमंद लोगों की मदद करना आवश्यक है। परमेश्वर अपने सेवकों के द्वारा प्रार्थना का उत्तर देता है इसलिए हम किसी के लिए बिना कुछ किए और केवल यह सोचकर कि हम ने अपना फर्ज निभा दिया है, केवल प्रार्थना नहीं कर सकते।

यदि कोई पुरुष ही स्त्री को मण्डली में बोलने को कहे तो?

बैटी बर्टन चोट

"विमेन लिब्रेशन" जैसी मूवमैंटों के प्रभाव से इस युग में स्त्रियों को लीडरशिप की भूमिका लेने के लिए अधिकृत करने के प्रयास में हर प्रकार के तर्क दिए जाते हैं।

यह मानते हुए कि पवित्र शास्त्र कहता है, "मैं कहता हूं कि स्त्री उपदेश न करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए" (1 तीमुथियुस 2:12), पूछा जाता है, "मण्डली के ऐल्डरों या पुरुषों को, स्त्रियों के ऊपर अधिकार है। ऐसे में यदि कोई ऐल्डर स्त्री को मण्डली में प्रार्थना करने या प्रचार में अगुआई करने के लिए बुलाए, तो क्या इसकी अनुमति होगी, क्योंकि ऐसा होने पर वह तो केवल ऐल्डर के अधीन रहते हुए उस की बात को ही मान रही होगी?"

विचार करने वाली बात

यदि पौलुस आज होता और यह कहता कि, मैं (पवित्र आत्मा के अधिकार से) कहता हूं कि स्त्री उपदेश न करे..." तो जाकर उसके मुंह पर यह कहने वालों को कैसा लगता "परन्तु मैं कहता हूं कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता" ढिठाई से ऐसी घोषणा करने वाले नाचीज इंसान होते कौन हैं?

देखने में लगता है कि कुछ गलत नहीं है। क्योंकि जब पुरुषों ने ही उसे प्रार्थना करने या उपदेश देने के लिए कहा हो तो इसमें स्त्री पुरुष पर अधिकार कैसे चला रही हो सकती है? परन्तु हमें यह बड़ी महत्वपूर्ण बात भूलनी नहीं चाहिए कि स्त्री का सिर पुरुष है और हर पुरुष का सिर मसीह है। (1 कुरिन्थियों 11:3) पवित्र शास्त्र पवित्र आत्मा के अधिकार के द्वारा लिखा गया था न कि

किसी मानवीय लेखक के विचार से। जिन्होंने लिखा कि पुरुष कलीसिया की सभाओं में अगुआई करें, वे अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि वही लिख रहे थे जिसका निर्देश उन्हें पवित्र आत्मा ने दिया था। यानी ये शब्द उन लिखने वालों के नहीं थे।

कलीसिया में यदि आज कोई ऐल्डर या डीकन पुरुषों और स्त्रियों की मिली-जुली सभा में स्त्री से प्रार्थना करने के लिए या प्रचार करने के लिए कहे तो वह स्त्री को पवित्र शास्त्र के स्पष्ट निर्देशों को टालने को कह रहा है। बेशक पुरुष होने के कारण वह स्त्री की अगुआई कर सकता है, परन्तु वह प्रभु के द्वारा दिए गए निर्देश से बढ़कर अपनी मर्जी नहीं चला सकता। ऐसा कहना वचन के विरूद्ध ढिठाई का पाप है और पवित्र शास्त्र में इसकी कड़ी निंदा की गई है।

आमतौर पर इन निर्देशों को मानने से गड़बड़ी कर आरंभिक पारिवारिक तौर पर इकट्ठे होने के समय होता है। जब दो परिवार इकट्ठे खाना खा रहे होते हैं और एक आदमी वहां बैठी एक महिला को भोजन के लिए धन्यवाद करने को कह देता है, या घर में प्रार्थना सभा के दौरान जहां मिले-जुले लोग भाग ले रहे होते हैं, जिनमें "चेन" प्रेयर में पुरुषों तथा महिलाओं दोनों के भाग लेने की अपेक्षा की जाती है। यह कलीसिया की सम्पूर्ण आराधना वाली सभा नहीं होती, इसलिए वे इसे पवित्र शास्त्र के स्पष्ट हवाले के बजाय व्यक्तिगत निर्णय पर छोड़ देते हैं।

परन्तु प्रार्थना का हर अवसर आराधना से भरा ही होता है और पुरुष के लिए किसी महिला को सब के मनों को परमेश्वर के सिंहासन में ले जाने के लिए कहना वही ढीठपन है। परमेश्वर के सिंहासन में पुरुषों और स्त्रियों की मिली-जुली किसी भी मण्डली में स्त्री के अगुआई करने का न तो कोई उदाहरण है और न ही पवित्र शस्त्र में इसकी कोई अनुमति है। इस कारण ऐसा करने का हमारे पास कोई अधिकार नहीं है।

व्यवस्था की पुस्तक में हमें एक ऐसी ही परिस्थिति मिलती है। जब परमेश्वर ने कहा था कि यदि कोई नबी या स्वप्न दर्शी (जो अपने अधिकार को पवित्र शास्त्र के अधिकार से बढ़कर बताएं) इस्राएलियों को भ्रमित करने का प्रयास करे, चाहे कोई "चमत्कार" या चिन्ह या अद्‌भुत काम करके दिखाए और कहे कि हम "अन्य देवताओं के पीछे चलें और उनकी पूजा करें" तो "तब तुम उस भविष्यदूक्ता या स्वप्न देखने वाले के वचन पर कभी कान न धरना; ...तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना, और उसका भय मानना, और उसकी आज्ञाओं पर चलना, और उसका वचन मानना, और उसकी सेवा करना, और उसी से लिपटे रहना। और ऐसा भविष्यदूक्ता वा स्वप्न देखने वाला तुम को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से फेर के, ...तेरे परमेश्वर यहोवा के मार्ग से बहकाने की बात कहने वाला ठहरेगा, इस कारण वह मार डाला जाए...." (व्यवस्थाविवरण 13:2-5)।

आज हम मूसा की व्यवस्था के अधीन या उस युग में तो नहीं रह रहे हैं, जिसमें परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ने वालों को दण्ड

देने का अधिकार था, परन्तु हमें जो वह कहता है उसे सुनने और केवल उसी की मानने के महत्व को कम नहीं करना चाहिए। किसी भी पुरुष या महिला द्वारा परमेश्वर के निर्देशों को फिर से लिखकर उसके ठहराए अधिकार के क्रम को बदलकर दूसरी बात सोचना, गंभीर अपराध है। बेशक कोई मसीही व्यक्ति, ऐसा पाप करने का अपराधी नहीं होना चाहेगा।

पवित्र आत्मा द्वारा निरुत्तर किया जाना (यूहन्ना 16)

ऍंडी क्लोर

"तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। और धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूं, और तुम मुझे फिर न देखोगे, न्याय के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। "

"मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी है, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते" (आयतें 7-12)।

अपनी मृत्यु से पहले गुरुवार की रात अटारी वाले कमरे में अपने प्रेरितों को जो एक महत्वपूर्ण सच्चाई यीशु ने बतानी चाही वह यह थी कि वह उनके पास पवित्र आत्मा भेज रहा है। पवित्र आत्मा ने उन्हें उनके भावी कार्य के लिए आवश्यक सहायता देनी थी। वास्तव में यीशु इसी लिए जा रहा था ताकि पवित्र आत्मा आ सके। थोड़ी ही देर के बाद, यीशु के कलीसिया पर प्रभु के रूप में शासन आरंभ करने पर (प्रेरितों 2:36), पवित्र आत्मा ने सिखाने और अगुआई देने का अपना काम आरंभ करना था। इन तथ्यों के प्रकाश में यीशु का जाना प्रेरितों के लाभ के लिए था ताकि पवित्र आत्मा आकर अपने काम को आरंभ कर सके। प्रेरितों को उसकी आवश्यकता थी और बिना उसके संसार का उद्धार नहीं हो सकता था।

पवित्र आत्मा ने आकर, तिहरे कार्य के साथ निरुतर करने की सेवकाई में लगा जाना था। (1) इसमें प्रेरितों अर्थात मसीह के चेलों को आशीष देने (2) इसमें हमारे प्रभु के पृथ्वी पर के जीवन और मृत्यु की सच्चाई की पुष्टि करनी थी (3) यह वह माध्यम होना था जिसके द्वारा गैर मसीही लोग मन फिरा सकते थे, ऐसा मन फिराव जो परमेश्वर के साथ वाचा के संबंध में ले जाता है। यूहन्ना 16:7-12 में यीशु ने विशेष रूप में इस बात को प्रकाशमान किया कि पवित्र आत्मा किस प्रकार से उसकी शिक्षाओं, मृत्यु और पुनरुत्थान के संबंध में संसार को निरुत्तर करेगा।

विद्रोह

आत्मा ने गैर मसीही संसार को पाप के विषय में निरुत्तर करना था। यीशु ने कहा, "और वह आकर संसार को पाप..." विषय में निरुत्तर करेगा (16:8)। वह संसार को उसे ठुकराने की पाप की वास्तविकता और दोष से निरुत्तर करता है। सही और गलत के संसार के अपने मानक है। यह धार्मिकता को कम करके पाप को बढ़ावा देता है। यह पाप को दण्डित करने के बजाय इसकी स्वीकृति देता है और इसमें यीशु को स्वीकार करने के बजाय उसे क्रूस पर चढ़ाना है। चार्ल्स आर. अर्डमैन ने इस सच्चाई पर विचार किया है–

इसका अर्थ यह नहीं है कि अविश्वास पाप है; बेशक यह पाप है पर इसका अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा संसार को इसके मसीह को ठुकराने के आधार पर प्रमाण पर पापी होने का दोष लगाएगा। मसीह में विश्वास न करना पाप है; पर यहां जो सच्चाई बताई जाती है वह यह है कि मसीह को ठुकराना व्यक्ति के पापी होने को दिखाता है। मसीह भला पवित्र और शुद्ध है; उसे ठुकराने का अर्थ भलाई और पवित्रता और शुद्धता और प्रेम का विरोधी होने के कारण अपने आपको दोषी ठहराना है। जब मसीह का प्रचार किया जाता है तो वह चरित्र की कसौटी का पत्थर बन जाता है।

परमेश्वर की प्रेरणा पाए प्रेरितों और परमेश्वर की प्रेरणा से दिए पवित्र शास्त्र के द्वारा पवित्र आत्मा ने संसार को न केवल पाप की वास्तविकता बल्कि पाप की विनाशकारी प्रकृति को भी दिखाना था। उसने यह पहचान करानी थी कि पाप क्या है, इसके स्वभाव को स्पष्ट करना था और इस बात को खोलकर बताना था कि यह कहां तक जाता है।

यीशु ने कहा, "और वह आकर संसार को पाप... के विषय में निरुत्तर करेगा। पाप के विषय में इसलिए कि वह मुझ पर विश्वास नहीं करते" (16:8, 9)। हर प्रकार के पाप को व्यवस्था या परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ने के रूप में वर्णित किया जा सकता है। परन्तु यीशु की तरह ही हम कह सकते हैं कि सबसे बड़ा पाप उसे अर्थात परमेश्वर के पुत्र को ठुकराना है। जिसे परमेश्वर का वचन और उद्धार का उसका मार्ग बताने के लिए हमारे पास भेजा गया। यह भयंकर पाप है। यीशु के चले जाने के बाद पवित्र आत्मा ने यीशु की कही बातों को, उसके किए कामों और उस उद्धार को जो वह संसार में लाया था, याद दिलाना था। जिन्होंने मसीह के संदेश और उसकी हस्ती को नकारा उन्होंने अपने आपको दोषी पाना था। प्रेरितों और परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लोगों के द्वारा काम करते हुए आत्मा ने इसी सच्चाई की पुष्टि करनी थी।

धार्मिकता

इसके अलावा आत्मा ने संसार को धार्मिकता के विषय में निरुत्तर करना था। यीशु ने कहा "और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता.... के विषय में निरुत्तर करेगा" (16:8) । पवित्र आत्मा ने संसार को बताना था कि सच्ची धार्मिकता क्या है और वह साबित करना था कि यीशु, जिसे उन्होंने क्रूस पर चढ़ा

दिया था, यीशु परमेश्वर का वह धर्मी जन था। उसने उन्हें जो धार्मिकता के इच्छुक हैं परमेश्वर के साथ सही संबंध में ले जाकर सच्चे मन वाले लोगों को विश्वास की धार्मिकता में अगुआई करनी थी। ऐसी धार्मिकता परमेश्वर की आज्ञाओं में चलने से आती है। इसे पाने और इसमें बने रहने के लिए व्यक्ति के लिए इसमें चलना और इसमें बने रहना आवश्यक है। संसार को परमेश्वर की ओर से भेजी गई सच्चाई देकर आत्मा ने इन अदभुत उद्देश्यों को पूरा करना था।

हमारे प्रभु ने प्रेरितों को समझाया कि संसार को "धार्मिकता के विषय में" कायल करना आवश्यक है। इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हू और तुम मुझे फिर न देखोगे (16:10, 11)। उसने प्रेरितों को और संसार को दिखाया था कि धार्मिकता क्या है? यीशु ने चाहे इसका प्रचार करने और इसे जीने के लिए यहां नहीं होना था पर लिखित वचन का इस्तेमाल करते हुए पवित्र आत्मा ने सिखाने की अपनी इस भूमिका को निभाना था। संसार ने यीशु को अधर्मी जानकर ठुकरा दिया था, पर आत्मा ने उसे मरे हुओं में से उसके जी उठने और स्वर्ग में उसके उठाए जाने का प्रचार करने के द्वारा उसकी धार्मिकता की पुष्टि करनी थी। उसने पिता के दाहिने हाथ मध्यस्थ अर्थात सिफारिश करने वाले के रूप में यीशु के काम की घोषणा करनी थी।

प्रतिफल

तीसरा, पवित्र आत्मा ने संसार को न्याय के विषय में निरुत्तर करना था। यीशु ने कहा, "और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा" (16:8)। आत्मा ने संसार को वर्तमान न्याय और भविष्य में होने वाले न्याय के बारे में बताना था। यीशु ने प्रचार किया न्याय आने वाला है, "अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा" (12:31)। उसने आने वाले अंतिम अनन्त न्याय की भी घोषणा की थी (12:48; मत्ती 25:34-46)। आत्मा का कुछ काम संसार को ऐसे ही संदेशों अर्थात ऐसे ही संदेश प्रकट करना था। परमेश्वर अपने ठहराए हुए दिन पर हर किसी को हिसाब देने के लिए बुलायेगा और संसार को इस सच्चाई का सामना करना पड़ेगा। नहीं तो पापी लोग जवाबदेही की अवधारणा को नजर अंदाज कर देंगे। आत्मा की गवाही के द्वारा यह संदेश संसार के सभी खोए हुए लोगों को बताया जा सकता है।

पवित्र आत्मा लोगों को "न्याय के विषय में" निरुत्तर करने आ रहा था, "इसलिए कि ससार का सरदार दोषी ठहराया गया है" (16:11)। अपने धर्मी जीवन, पाप के लिए अपनी मृत्यु और अपनी शिक्षाओं में यीशु ने संसार का न्याय कर दिया। उसने उन सब के साथ जो अपने सरदार के पीछे चलते थे अर्थात अंधकार के हाकिम का न्याय किया। यह न्याय स्पष्टतया यीशु के जीवन और क्रूस पर उसकी मृत्यु में घोषित किया गया। तौभी संसार के न्याय का संदेश के पहले से स्पष्ट रूप में रखा गया था। आत्मा ने आकर इसी काम को करना था।

कुरिन्थियों के लिए पौलुस के निर्देश

मुख्य वचन : 1 कुरिन्थियों 10:16-22; 11:17-34

ऑवन डी. अलब्रट

प्रभु भोज के संबंध में पौलुस की शिक्षा 1 कुरिन्थियों के दोनों भागों में मिलती है (10:16-12; 11:17-34)। हमें प्रभु भोज सप्ताह के पहले दिन (प्रेरितों 20:7) आराधना सभाओं के लिए अन्य मसीही लोगों के साथ इकट्ठा होकर लेना अनिवार्य है (1 कुरिन्थियों 11:17, 18, 33, 34 देखें आयत 20) यह मूल निर्देश देने के अलावा पौलुस ने पहली सदी की कलीसिया में पाई जाने वाली उन समस्याओं पर बात की थी जो कुरन्थियों को प्रभु भोज लेने के समय प्रभावित कर रही थी।

1 कुरिन्थियों 10:16-22

इस हवाले से कुछ मुख्य वाक्याशों की समीक्षा करने से बाइबल के छात्रों को भोज की पूरी समझ मिल सकती है :

"धन्यवाद का कटोरा" (आयत 16)। "कटोरा" से अभिप्राय वह सामान था जो कटोरे में था न कि अपने आप में कटोरे का। लोग कटोरे को नहीं बल्कि जो उसमें है उसे पी पाते थे। हम कटोरे को "आशीष" नहीं देते; बल्कि हम कटोरे की चीज़ से आशीषित होते हैं, जो यीशु के लहू को दर्शाता है।

"मसीह का लहू" (आयत 16)। पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि कटोरा यीशु का लहू था या लहू कटोरे में था बल्कि यह कि कटोरे में से दाख के रस को पीने से आत्मिक रूप में उसके लहू की सहभागिता होती थी।

"रोटी जिसे हम तोड़ते थे" (आयत 16)। रोटी ही थी जो भोज में खाई गई थी। पौलुस ने बताया कि रोटी तोड़ी गई न कि यीशु की देह को। यीशु के शरीर के प्रतीक के लिए रोटी का इस्तेमाल करके कुरिन्थयों को आत्मिक रूप में यीशु की देह का सम्मान इस प्रकार करना था जैसे वह स्वयं वहां हो।

"मसीह की देह" (आयत 16)। पौलुस ने यीशु की देह लिखा था पर उसका अर्थ यह नहीं था कि यीशु की देह से रोटी खाई जाती है। उसने कहा था कि मसीही लोग रोटी को खाते थे न कि वास्तव में यीशु की देह को खाते थे।

"एक रोटी" का उल्लेख दो बार है (आयत 17) जो तत्व की बात है न कि रोटियों की संख्या की। एक बुद्धिमान व्यक्ति ने सही कहा है, "रोटी की एकता को संख्या में नहीं बल्कि गुण में समझा जाना चाहिए जैसे भोज की एक वही रोटी। रोटी अर्थात उसी तत्व का खाना जो भाग लेने वालों को एक करने वाला होना चाहिए, ताकि एक आत्मिक अर्थ में वे एक हो जाएं।

"एक ही देह" (आयत 17)। पौलुस ने मसीह की शारीरिक देह से अपने विचार को कलीसिया में बदल दिया। मेविन आर, विन्सेंट ने ध्यान दिलाया कि पौलुस का अर्थ था प्रभु की देह से (आयत 16) प्रतीकात्मक अर्थ अर्थात विश्वासियों की देह अपनी कलीसिया में जा रहा था।

"प्रभु का कटोरा" (आयत 21)। यह कटोरा "धन्यवाद के कटोरे" वाला ही है (आयत 16) मसीही लोग उसके अन्दर रखी चीज को पीते हैं न कि बर्तन को।

"दुष्टात्माओं का कटोरा" (आयत 21)। दुष्टात्माओं के सभी पुजारी एक ही कटोरे से नहीं पीते और न ही अलग-अलग मण्डलियों में बिखरे हुए मसीही लोग केवल एक ही कटोरे में से पीते हैं। "कटोरा" उस तरल को कहा गया है जो "कटोरे" के अन्दर है और जिसे वह दर्शाता है न कि स्वयं कटोरे को।

"प्रभु की मेज" (आयत 21)। "मेज" के पौलुस के प्रतीकात्म्क इस्तेमाल से यह सुझाव मिला कि मेज पर क्या है न कि यह कि इसका अर्थ मेज है। वह यह संकेत नहीं दे रहा था कि प्रभु की केवल एक ही मेज है या दुष्टात्माओं की केवल एक मेज है।

"दुष्टात्माओं की मेज" (आयत 21)। दुष्टात्माओं की मेज प्रभु की मेज की तरह मेज पर रखी चीज के लिए एक अलंकार है। पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि दुष्टात्माओं की केवल एक मेज; उसने दुष्टात्माओं को भेंट किए जाने वाले भोजनों के लिए जो मूर्तिपूजकों के मन्दिरों में मेजों पर दिए जाते थे, "मेज" का इस्तेमाल किया। इनमें से कुछ अवधारणाओं की गहराई से समीक्षा करने की आवश्यकता है।

"धन्यवाद का कटोरा"

"धन्यवाद" संज्ञा रूप प्रभु भोज के संबंध में केवल 1 कुरिन्थियों 10:16 में ही मिलता है। रोटी (मत्ती 26:26; मरकुस 14:22) और कटोरे (1 कुरिन्थियों 10:16) को "आशीष" देने के लिए वैसे ही किया इसका इस्तेमाल किया गया है। "धन्यवाद" जिसका लिप्यंतरण 'यूखरिस्त' है। कटोरे (मत्ती 26:27; मरकुस 14:23; लूका 22:17) और रोटी (लूका 22:19) के लिए धन्यवाद देने के लिए भी लागू होता है। "आशीष" और "धन्यवाद" का इस्तेमाल एक-दूसरे के स्थान पर किया गया है। "आशीष का अर्थ कटोरे के लिए किसी प्रकार की आशीष देने से नहीं बल्कि इस पर की जाने वाली प्रार्थना से जुड़ा है।"

"धन्यवाद का कटोरा" की पृष्ठभूमि के संबंध में कम से कम तीन सुझाव दिए गए है : (1) यूनानी भाषा बोलने वाले साम्प्रदाय के भोजनों की पृष्ठभूमि; (2) या तो यहूदी घर में प्रतिदिन का खाना या शायद सम्भवतया यहूदी भोज का "विशेष" रूप (3) फसह के भोजन का संदर्भ। कई लेखक धन्यवाद के कटोरे को चार कटोरों में से तीसरे के साथ मिलाते हैं, चाहे कइयों का तर्क है कि इसका संकेत संभवतया फसह का चौथा कटोरा है।

क्योंकि यहूदियों द्वारा फसह के तीसरे कटोरे को "आशीष का कटोरा" कहा जाता था, इस कारण कुछ टीकाकारों ने निष्कर्ष निकाला है कि 1 कुरिन्थियों 10:16 में पौलुस के मन में यही था। यह पौलुस का या तो संयोग हो सकता है या पौलुस द्वारा की गई एक तुलना पर किसी को भी निर्णायक ढंग साबित नहीं किया जा सकता। फसह में तीसरे कटोरे का इस्तेमाल यहूदियों की एक प्रथा थी, क्योंकि पुराने नियम में ऐसा कुछ नहीं कहा गया। पौलुस यहूदी प्रथा में से विशेषकर जब वह एक ऐसी कलीसिया को लिख रहा है जिसमें अधिकतर लोग अन्य जातियों में से है; शब्दावली का इस्तेमाल क्यों करेगा? यदि "धन्यवाद का कटोरा" वाक्यांश का इस्तेमाल करने के लिए पौलुस का यही कारण था तो उसके ऐसा आमतौर पर करने का यह अपवाद है। नये नियम की प्रथाओं के पूर्वलक्षणों को प्रकाशमान करने के लिए उसने पुराने नियम की शब्दावली का इस्तेमाल किया (रोमियों 12:1; 1 कुरिन्थियों 5:7; इफिसियों 5:2; फिलिप्पियों 2:17), परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा रहित परम्पराओं से नहीं।

रोटी से पहले पौलुस के कटोरा के उल्लेख का प्रभु भोज के मनाए जाने के क्रम के संबंध में कोई महत्व नहीं होगा। मेयर्स संभवतया सही था जब उसने सुझाव दिया कि पौलुस

ने कटोरे का उल्लेख पहले इसलिए किया क्योंकि उसने "रोटी के बारे में अधिक विस्तार से समझाया इसके साथ, विशेषकर रोटी के इस्राएलियों के भाग लेने की चर्चा करते हुए, मूर्तियों को चढ़ाए गए मास के उसके विषय से मेल खाता होने के कारण। अन्य आयतों (मत्ती 26:26-28; मरकुस 14:22-25; 1 कुरिन्थियों 11:23-25)। स्पष्ट दिखाती है कि रोटी कटोरे से पहले दी गई थी।

"मसीह के लहू में सांझ"

1 कुरिन्थियों 10:16 में "सांझ", सहभागिता और भागीदारी के अनुवाद "कोयनोनिया" से किए गए हैं जिसका अर्थ एक दूसरे के साथ मिलकर बांटना है (देखें 1 कुरिन्थियों 10:18, 20)।

कोयनोनिया कलीसिया के अंगों के सदस्यों का कुलयोग नहीं बल्कि कलीसिया के भीतर और उसके द्वारा मध्यस्थता किए जाने में पाया जाने वाला संबंध, अर्थात सदस्यों और भागों के एक दूसरे का संबंध या सदस्यों और भागों का पूरी कलीसिया के साथ संबंध है। यह निश्चित रूप में सामान्य वस्तु के रूप में है जिसमें संगति से संबंधित सभी लोग भाग लेते हैं।

पुराने नियम के याजक वेदी के बलिदान किए गए पशुओं के चुनिन्दा अंगों को खाकर वेदी में भाग लेते थे (लैव्यव्यवस्था 8:31)। प्रभु की मेज और मूर्ति की मेज में खाने वाले मसीही लोग यीशु और दुष्टात्माओं दोनों के साथ भागीदारी कर रहे थे। पौलुस ने चाहा कि वे विशेष रूप में यीशु और साथी मसीही लोगों के साथ सांझ करें, न कि दुष्टात्माओं के साथ। "आराधना या बलिदान के विशिष्ट कार्य के द्वारा सहभागिता पर जोर देने के लिए पौलुस परमेश्वर के साथ के बजाय वेदी के साथ कहता है।

कटोरा और रोटी यीशु के शरीर और लहू में सहभागिता या सांझ हैं।

"मसीह के लहू में भागीदारी" का अर्थ मसीह के साथ सहभागिता के यादगारी प्रतीक होना चाहिए न कि उसके लहू को वास्तव में पीना, इस तथ्य से स्पष्ट है कि यह भोज स्थापित करने के समय मसीह अभी मरा नहीं था और यह भागीदारी उसे स्मरण करने में है न कि उसे पीने में (देखें 1 कुरिन्थियों 11:25)।

प्रभु भोज के शारीरिक तत्वों को लेते हुए आत्मिक रूप में शामिल होने की आवश्यकता इस अवसर को बपतिस्मे के साथ मिलाती है। शारीरिक रूप में गाड़े जाने और पानी में से जी उठने के समय हृदय से आज्ञापालन आवश्यक है (रोमियों 6:4-18)। जो "पाप के दास थे" अब "धर्म के दास" बन गए (रोमियों 6:17, 18) और उनके पाप क्षमा हो गए हैं और बपतिस्मे में धो दिए गए हैं (प्रेरितों 2:38; 22:16; कुलुस्सियों 2:12, 13)। बपतिस्मा अपने आप से ऐसा बदलाव नहीं ला सकता यानी मन का बदलना इसके साथ जुड़ा हुआ है।

इसी प्रकार से प्रभु-भोज से हमें आत्मिक रूप में केवल इसलिए लाभ नहीं मिलता कि हमने शारीरिक रूप में इसमें से लिया है। हमें आत्मिक रूप में प्रभु के साथ और एक तर्कसंगत दर्जे तक अपने मसीही साथियों के साथ सहभागिता और संगति रखनी आवश्यक है।

मसीही लोग प्रभु के साथ और एक दूसरे के साथ सहभागिता के अपने मुख्य काम में सहभागी है, यह सहभागिता इतनी अंतरंग और सम्पूर्ण है कि वह कहता है (देखें 1 कुरिन्थियों 10:17) इसलिए कि एक ही रोटी है, तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह, क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते है।

"कटोरा", "मेज" और "रोटी"

"कटोरा", "मेज" और "रोटी" के बारे में लिखते हुए पौलुस ने अलंकार का इस्तेमाल किया। साहित्य का यह विशेष उपाय जिसे "लक्षण" कहा जाता है एक तुलना है जिसमें एक शब्द का अर्थ इससे जुड़े किसी शब्द वाला होता है। कटोरे और मेज का अर्थ उनमें पाए जाने वाले समान के लिए था। एक रोटी यीशु को अर्थात जीवन की रोटी को कहा गया है। "देह" (या एक देह जैसा 1 कुरिन्थियों 10:17) के हवाले कई बार कलीसिया के लिए इस्तेमाल हुए हैं (देखें रोमियों 12:5; 1 कुरिन्थियों 12:13, 20; इफिसियों 1:22, 23; 2:16; 4:4; कुलुस्सियों 1:18, 24; 3:15)। यीशु ने जिसे आशीष दी वह कटोरा नहीं बल्कि उसमें रखी चीज थी। इसी प्रकार से पौलुस ने मेज पर रखी चीज की बात की न कि स्वयं मेज की (1 कुरिन्थियों 10:21)।

जो लोग रोटी खाते और प्रभु के कटोरे में से पीते हैं वे आत्मिक रूप में उसके साथ और उसकी देह और लहू के साथ सांझ करते हैं। 1 कुरिन्थियों 10:21 में हमें इसका विपरीत मिलता है, जो लोग मूर्तों को बलि किए हुए भोजन खाते हैं वे आत्मिक रूप में उन दुष्टात्माओं के साथ सहभागिता करते हैं जिनहें वे मूर्तियां दर्शाती हैं।

"दुष्टात्माओं की मेज"

पौलुस ने लिखा कि कोई व्यक्ति प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे से पिया प्रभु की मेज या दुष्टात्माओं की मेज से खा "नहीं सकता।" वह दोनों काम करने के बेमेलपन की बात कर रहा था जो हो नहीं सकता बल्कि न कि असंभावना की। उसके कहने का अर्थ था कि अपनी मेज पर आराधना में मूर्तिपूजकों के साथ सहभागिता करने वाला व्यक्ति उन दुष्टात्माओं की आराधना कर रहा था जो उनकी मेजों से संबंधित थे। अन्य आयतों की तरह (लूका 11:7; 1 यूहन्ना 3:9)। "नहीं सकता" का इस्तेमाल "असंभव" और बिना कठिनाई के नहीं" के अर्थ में इस्तेमाल किया जाता है। "पवित्र शास्त्र की बोली में नहीं सकता का अर्थ आमतौर पर नहीं होगा होता है, ... मत्ती 9:15; 12:34; 16:3।"

आराधना के योग्य केवल परमेश्वर ही है (मत्ती 4:10) इस कारण वह अपने अनुयायियों से अपेक्षा करता है कि वे किसी भी और व्यक्ति या वस्तु की सेवा न करें। यदि हमारी निष्ठा और आदर परमेश्वर को छोड़ किसी भी व्यक्ति या वस्तु को दिए जाते हैं तो इससे उसे जलन होती है; क्योंकि वह जलन रखने वाला परमेश्वर है (1 कुरिन्थियों 10:22; भी देखें निर्गमन 20:5; व्यवस्थाविवरण 4:24; 5:9; 32:16, 21)।

पौलुस ने प्रभु की मेज से और मूर्तियों की मेज से खाने के बेमेलपन पर जोर दिया (1 कुरिन्थियों 10:16-22)। यदि मसीही लोग काफिरों की मेजों की मूर्तियों के चढ़ावे खाते हैं तो वे दुष्टात्मा की पूजा करने वाले होंगे।

इस्राएलियों के वेदी पर बलिदान करने और उस बलिदान के भाग को खाने पर (लैव्यव्यवस्था 7:15; 8:31; व्यवस्थाविवरण 12:17, 18) वे बलिदान के पर्व और परमेश्वर का अर्थ यह नहीं है कि किसी मूर्ति को चढ़ाया गया मांस या मूर्ति अपने आप में कुछ है, पर उसके कहने का अर्थ यह है कि जब काफिर लोग बलिदान करते हैं, तो वे ऐसा दुष्टात्माओं के लिए करते हैं और वह नहीं चाहता कि मसीही लोग आराधना में दुष्टात्माओं के साथ कोई सांझ करें। क्योंकि दोनों सही नहीं हो सकते, यानी मसीह और दुष्टात्माओं दोनों में भागीदार होना असंभव है।